दिनांक 03 अप्रैल, 2010 को वृन्दावन, मथुरा में गिल्ड फार सर्विस द्वारा आयोजित सद्भावना स्थल के लोकार्पण समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

———————————

देवियों और सज्जनों,

गिल्ड फार सर्विस के तत्वावधान में आज यहाँ सद्भावना स्थल के लोकार्पण हेतु आयोजित समारोह में आप सबके बीच आकर मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है। इस समारोह में आमंत्रित करने के लिये मैं डा0 वी0 मोहनी गिरी जी का आभार व्यक्त करता हूँ। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि सद्भावना स्थल

का निर्माण कर इसका आरम्भ सभी धर्मो की प्रार्थना से किया जा रहा है। मुझे खुशी है कि यह सर्वधर्म स्थल विश्व के आठ महान धर्मो को समर्पित है और सभी धर्म एकता, समानता, शांति और सद्‌भावना तथा पारस्परिक प्रेम का सन्देश देते हैं।

मैं इस अवसर पर सद्‌भावना स्थल के निर्माण के लिये आप सभी को बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि इस सद्‌भावना स्थल के लोकार्पण से पूरे विश्व में एकता, समानता, शांति, सद्‌भाव और भाईचारे का नया पैगाम जायेगा। आज वैश्विक शांति (**Global Peace**) और सर्वधर्म सम्‌भाव की आवश्यकता है, जिसके लिये

पूरे समाज को अपना योगदान देना चाहिये। यहाँ पर आमंत्रित सभी धर्मो के मनीषी जनों का मैं स्वागत करता हूँ और आज के आयोजन से सद्भाव और आपसी भाईचारे का जो सन्देश जायेगा, वह भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिये एक प्रेरणा का स्रोत होगा और विश्व में भारत को एक नई पहचान भी देगा। मैं इस अनुपम आयोजन की सराहना करता हूँ।

गिल्ड फार सर्विस संस्था को मैं महिलाओं और बच्चों के उत्थान के प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठा के लिये साधुवाद देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि यह संस्था आगे भी इस पुनीत कार्य में अपना महती योगदान देती रहेगी।

वस्तुतः मथुरा की इस धरती ने प्रेमाभक्ति को जन्म दिया, जहाँ वेदों का सार हो, जहाँ श्रीमद्‌भागवत् जैसे ग्रन्थ की लीलामयी अनुभूति हो, ऐसे ब्रज को कोटिशः नमन् ही किया जा सकता है। आध्यात्मिक चिन्तन के लिये विख्यात इस ब्रजभूमि ने अपने रसोमय चिन्तन से न केवल देश में अपितु विश्व में भक्ति एवं ज्ञान की गंगा को प्रवाहित किया है। ब्रज संस्कृति वह महान संस्कृति है जो भगवान कृष्ण की सोलह कलाओं से युक्त है।

हमारा देश ऋषि–मुनियों का देश रहा है। यहाँ असंख्य महापुरूषों ने जन्म लेकर पीड़ित और शोषित मानवता के कल्याण हेतु प्रेम–एकता, वसुधैव कुटुम्बकम तथा धर्म–निरपेक्षता का पावन

सन्देश दिया है। हमारी भारतीय संस्कृति की जड़े आध्यात्म के मूल से निकली है और आस्था एवं दूरदर्शिता के बीज से उगकर पुष्पित एवं पल्लवित हुई है। विश्व की अनेक संस्कृतियों ने हमसे सीखा और हमें आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता अनेकता में एकता तथा विभिन्नता में एकरूपता की द्योतक रही है। हमारी संस्कृति के आदर्श मानवीय मूल्यों का ही यह नतीजा है कि युगों से भारत में अनेक धर्मावलम्बियों ने इसे अपनाया और अपनी संस्कृति को इसमें समाहित किया। यही कारण है कि भारत की गंगा–जमुनी संस्कृति सदियों से विश्व विख्यात रही है।

भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता की गौरव गाथा का उल्लेख करते हुए प्रसिद्ध विदेशी इतिहासकार विसेंट स्मिथ ने लिखा है कि ——''निःसन्देह भारत की एक गहरी आधारभूत एकता है, जो रक्त, रंग, भाषा, वेशभूषा, आचार—व्यवहार अथवा पंथ जैसी असंख्य विविधताओं से ऊपर उठी हुई है।''

धर्म वस्तुतः भगवान और मानव के बीच आस्था, विश्वास और श्रद्धा से परिपूर्ण रिश्ते को सुदृढ़ बनाये रखने का एक सशक्त माध्यम है। भगवान, गॉड, खुदा और वाहे गुरू तक पहुँचने का एक ही मार्ग है, वह है सत्यपथ।

हमारे देश में मध्य कालीन युग में धर्म–निरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव और राष्ट्रीय एकता की भावना इतनी प्रबल थी कि अमीर खुसरों, रहीम, रसखान और जायसी जैसे अनेक मुस्लिम कवियों ने हिन्दू देवी–देवताओं का गुणगान किया। प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव पर जोर देने वाले कवियों में महाकवि तुलसीदास का भी विशेष योगदान है। उन्होंने कहा है कि––

‘‘पर हित सरिस धरम् नहिं भाई।

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।‘‘

यह सच है कि धर्म करूणा, दया, उपकार, सह–अस्तित्व और सहिष्णुता की भावना को मजबूत करता है। हम सभी लोग

जानते हैं कि बापू को कुछ भजन बहुत प्रिय थे। जरूर कुछ उन भजनों में विशेषता होगी या कोई सन्देश होगा। महात्मा गाँधी को

"वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ परायी जाणे रे
पर दुख्खे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आणे रे।"

तो बहुत ही प्रिय था। शायद इसके पीछे इंसानियत के लिये एक पैगाम है कि भगवान, ईश्वर जैसे नाम कितने ही अलग–अलग हों मगर वह उसी परमात्मा का नाम है, जो पूरे विश्व का सृष्टिकर्ता

है। रास्ते देखने में चाहे जितने अलग हों मगर अन्त में मंजिल एक ही होगी। ऐसा मेरा मानना है।

धर्म की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि –“मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनो की ही शिक्षा दी। हम लोग सब धर्म के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मो को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।”

ज्ञान तथा विज्ञान के बल पर मनुष्य ने वैश्विक तथा ब्रह्मांडीय स्तर पर भौतिक दूरियाँ समाप्त कर ली हैं। परन्तु

मानव–मानव के बीच सद्‌भाव और मैत्री–सेतु के निर्माण के लिए पर्याप्त प्रयास अभी नहीं हो पायें हैं। यही कारण है कि विकास एकांगी होकर रह गया है और विज्ञान में अतुलनीय प्रगति के उपरान्त भी मानव जीवन पीड़ा व चिन्ताओं से मुक्त नहीं हो पाया है। इसका मूल कारण संकुचित मानसिकता व सीमित दृष्टिकोण है। इसलिए सदा स्मरण रखें कि व्यापक मानसिकता व उदार दृष्टिकोण से ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ा जा सकेगा।

संसार के सभी धर्म महान हैं। दुनिया का कोई भी धर्म ऐसा नहीं है, जो लोगों को नफ़रत या झगड़ा करने की शिक्षा देता हो। मन्दिर, मजिस्द, गिरजाघर, गुरूद्वारे तथा अन्य धार्मिक स्थल हमारे

हैं और सभी धर्म स्थल शांति और अमन के घर हैं। सभी को सभी धर्मो का मान–सम्मान और आदर करना चाहिए। तभी मानव–प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी तथा देश एवं प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

मैं अल्लामा इकबाल के इस शेर से अपनी बात समाप्त करता हूँ–

‘मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्तान हमारा।’’

धन्यवाद। नमस्कार।